Need to use fruits, vegetables and sugarcane for manufacturing of liquor

श्री धर्मबीर सिंह (भिवानी-महेन्द्रगढ़) : सभापति जी, धन्यवाद । आजकल देश में नकली शराब बहुत बनने लगी है । बहुत से प्रदेशों में आए-दिन कोई न कोई खबर आती रहती है । जो शराब बनाने वाली फैक्ट्रीज हैं, वे मेथेनॉल या स्प्रिट का प्रयोग करती हैं, जिसके कारण इस देश के अंदर हजारों आदमियों की जानें चली जाती हैं । हम इसीलिए इसे बाहर से आयात करते हैं, कभी यूएसए से, कभी यूके से तो कभी दूसरे यूरोपियन कंट्रीज़ से । इसमें पता नहीं हमारा कितना पैसा चला जाता है । शराब को हम पहले दारू बोलते थे, दारू-दवाई । वह ज्यादातर अंगूर से, गन्ने के रस से, जौ से, चावल से या पेड़-पौधों से बनती थी । मेरा सुझाव है कि इन मौतों को रोकने के लिए, किसान की आमदनी बढ़ाने के लिए दोबारा उसी दारू को बनाया जाए, चाहे वह गन्ने से बनी हो, चावल से बनी हो, दूसरी सब्जियां से बनी हो या अंगूर से बनी हो । बहुत सी ऐसी सब्जियां और फल हैं, जिनसे दारू बन सकती है, शराब नहीं । इससे किसान की आमदनी भी दो गुनी, तीन गुनी हो जाएगी । ईख या गन्ने के रस का उसे परमिट दिया जाए कि आप देसी शराब को बनाने के लिए ही लोकल लेवल पर ही इसे करें ।? (व्यवधान) स्टेट गवर्नमेंट अपनी एक्साइज ड्यूटी कैसे बचा सकती है? ?(व्यवधान) वह ऐसा मैकेनिज्म कर ले, जिससे एक्साइज ड्यूटी भी बढ़े और नकली दारू बनाने वाली फैक्ट्रीज़ के कुछ मालिक, जो बीच में बोलना चाहते हैं, उनके ऊपर भी पाबंदी लग जाएगी ।